हमारी कहानी, समय की जुबानी

ब्र.कु.श्वेता, शान्तिवन

हम देह नहीं, अविनाशी आत्मायें हैं। हमारी जीवन कहानी इतनी ही नहीं है कि हमने जन्म लिया और हम इस संसार से चले गये। यह तो केवल एक जन्म की कहानी है लेकिन हम सबकी जीवन कहानी अनेक जन्मों से होकर गुजरती है और इस सृष्टि नाटक को एक बहुत सुंदर रूप प्रदान करती है। यह कहानी हमने अनेक बार दोहराई है और फिर से दोहराने के लिए हम सब तैयार हैं। यह कहानी सत्य है, शाश्वत है, यह कहानी रहस्यमयी भी है तो रोचक भी है जिसे समय आज स्वयं सुना रहा है इसलिए यह आवश्यक है कि आप इसे सुने और गुने ताकि भविष्य के लिए तैयार हो सकें। तो लीजिए प्रस्तुत है नृत्य नाटिका 'हमारी कहानी, समय की जुबानी', हमारी कहानी समय की जुबानी –

क्या है वो अनकही कहानी जिसके हम सब पात्र
समय सुनाता आज जिसे, फिर गायेंगे शास्त्र

मैं समय हूँ और आज सार रूप में वह अमर कहानी कहने जा रहा हूँ जो इस सृष्टि रंगमंच पर हर 5,000 वर्ष में दोहराई जाती है। इस कथा का संबंध भारत के उत्थान और पतन से है। यह कहानी है मानव के पूज्य से पुजारी और पुजारी से पूज्य बनने की। यह कथा है मानव के पावन से पतित और फिर पतित से पावन बनने की। यह कथा है हारकर जीतने और फिर जीतकर हारने की।

यह कथा मेरी, आपकी, हम सबकी है क्योंकि हममें से हर एक इस नाटक का पार्टधारी है। मैं इस कथा को सुना सकता हूँ क्योंकि मैंने इस कथा को इतिहास की तरह गुजरते देखा है। मैं बीता हुआ कल भी हूँ, आज भी हूँ और आने वाला कल भी हूँ इसलिए इसकी हर घटना का मैं साक्षी हूँ। इसका हर पात्र मेरा देखा हुआ है। मैं यह कहानी आप लोगों को क्यों सुना रहा हूँ क्योंकि इसके हर बीते हुए पल का संबंध आपके भविष्य से है। न केवल भविष्य से है बल्कि भाग्य से भी है।

जैसे मेरे तीन काल खंड हैं, भूतकाल, वर्तमान और भविष्य काल। ऐसे ही इस सृष्टि पर मेरे तीन स्वरूप हैं..सतो, रजो, तमो। सोचता हूँ अपनी कहानी कहाँ से शुरू करूँ क्योंकि यह कहानी हर पांच हजार वर्ष में हूबहू दोहराई जाती है। इसलिए जो गुजरा हुआ कल है वही आने वाला कल भी है।

चलिए मैं शुरू करता हूँ इस कहानी को उस स्वर्णकाल से जब मैं अपनी संपूर्ण सतोप्रधान अवस्था में था। मेरी आँखों में उभरती है एक झिलमिल सुंदर स्वर्ण दुनिया..मैं देख सकता हूँ संपूर्ण वैभव के साथ सजी सृष्टि को, सर्व गुणों और कलाओं से सुशोभित देव-तुल्य मानव को। यही वह समय था जब शेर और गाय एक घाट पर पानी पीते थे। पवित्रता, शांति, सुख, प्रेम मानव के सच्चे साथी थे।

नृत्यः कमलकुंड के ऊपर एक नगरी प्यारी-प्यारी

सतयुग, त्रेतायुग के 2500 वर्ष तक मैंने इस सृष्टि को संपूर्ण सुखों में आकंठ डूबे देखा। ये वर्ष पलक झपकते कब बीत गये, पता ही नहीं चला। यह भाग्य की विडंबना है कि मैं सदा एक-सा नहीं रहता। मुझ समय के प्रभाव से कोई अछूता नहीं रहता। हर वस्तु नई से पुरानी होती है। जो मनुष्य आत्मा नई सतोप्रधान, सुंदर पावन थी, वो धीरे-धीरे पुरानी, तमोप्रधान, पतित होने लगी। पाँच विकारों रूपी रावण ने मनुष्य आत्मा की कला को कम कर उसे शक्तिहीन बना दिया। अवर्णनीय, अतुलनीय वैभव से युक्त वह स्वर्ग एकाएक लुप्त हो गया। पवित्रता, सुख, शान्ति, प्रेम रूपी मानव के अनमोल साथी एक-एक कर मानव से विदाई लेने लगे। चिंता, दुख, अशांति, हिंसा, तनाव जैसे शत्रुओं ने मानव को अकेला पा उस पर हमला बोल दिया। नितांत असहाय बेबस मानव ने भगवान को पुकारा। यह द्वापरयुग था जब मैं भक्ति के रंग में रंगा हुआ था।

नृत्यः एक तू ही भरोसा, एक तू ही सहारा

मुझ समय में अभी भगवान के आने का पार्ट नहीं था क्योंकि मुझ समय को अभी अपनी तीसरी तमोप्रधान अवस्था तक पहुँचना था। जैसे-जैसे वह अवस्था नजदीक आती जा रही थी, संसार में दुख, अशांति बढ़ती जा रही थी। आखिरकार मुझ समय ने अपने चौथे युग कलियुग में प्रवेश किया। मैं देख रहा हूँ चारों तरफ पांच विकारों का हमला है, हाहाकार है। मानव उलझ रहा है, मानव झुलस रहा है। इतनी तड़प, इतनी वेदना!

(दृश्यः हिंसा, अलगाव, तनाव....)

आँखें देखे, मौन मुख, दर्द सहा नहीं जाये
लेख विधाता का लिखा, कौन किसे समझाये

यदि मैं समय न रहा होता तो जो दृश्य मैं अभी देख रहा हूँ, उसे देखकर मेरी आँखें पथरा गई होती। और मैं सुन पा रहा हूँ ईश्वर के आने की आहट को जो नजदीक आ रही है

आश कह रही श्वास से
धीरज धरना सीख
मिलेंगे प्रभु एक दिन
होगी अपनी जीत।

संसार की आत्मायें कभी भगवान को दोष देती, कभी मुझे देती पर मैं कर ही क्या सकता था, मैं बड़े धीरज से इंतजार कर रहा था जब वह दयालु, कृपालु, रहमदिल बाप अपने मनुष्यात्मा बच्चों को फिर से उस सुखमय सृष्टि का मालिक बनाने के लिए अवतरित होगा क्योंकि एकमात्र मैं ही जानता था कि उनका इस सृष्टि नाटक में पार्ट है जो बहुत ही अनोखा, बहुत ही गुप्त है तो चलिए अब मैं सुना रहा हूँ उस अनोखे पार्ट की दास्तां।

आखिर वो क्षण आ गया जिसकी प्रतीक्षा स्वयं मैं और सृष्टि का हर कण-कण भी कर रहा था। स्वयं उस सर्वशक्तिवान परमात्मा का धरा पर आगमन!

निजानंद स्वरूपं, शिवोहम् शिवोहम्
प्रकाश स्वरूपं शिवोहम् शिवोहम्
ज्ञान स्वरूपं शिवोहम् शिवोहम्
मेरे मीठे बच्चो, जिसे तुम युगों-युगों से ढूँढते आये, मैं तुम्हारा वही प्यारा पिता शिव हूँ। मेरा रूप ज्योतिबिंदु है। अभी वर्तमान समय मैं प्रजापिता ब्रह्मा के माध्यम से तुम बच्चों से मिलन मनाने, तुम्हें नई सृष्टि सतयुग का वर्सा देने आया हूँ...।

परमात्मा का परकाया प्रवेश, उसके मुख से निसृत ज्ञान-रत्न, एक-एक कितना अमूल्य... पांच हजार वर्षों से बिछड़ी आत्माओं का परमात्मा से मधुर मिलन..कितना रोमांच, कितना आनन्द..विश्वास नहीं होता।

(गीत: मिलन की लगन में मगन आज मन है..पुलकित पवन है..ये गुंजित गगन है....)

आहा! मन करता है यही ठहर जाऊँ। उस प्यार के सागर के प्यार में खो जाऊँ..सुध-बुध भूल एक छोटे बच्चे की तरह इन हसीन पलों को जी लूँ। जो कुछ है.. यहाँ है.. इसी क्षण में है.....आँखें सजल हैं, होंठों पर मुसकान है और दिल शुक्रगुजार है। पर मैं समय तो किसी के लिए ठहरता नहीं। मुझे तो इस कथा को पूरा करना ही है।

इस कथा के पाँचवे चरण कल्याणकारी संगमयुग में परमात्मा पतित मानव आत्मा को पावन बनाकर सुख, शान्ति और प्रेम के खोये खजाने से संपन्न कर देते हैं और फिर से वो स्वर्णयुग धरा पर पुन: स्थापित हो जाता है। इस प्रकार मैं काल चक्र अनवरत गतिमान रहता हूँ। अच्छा मैं विदा लेता हूँ। आपसे फिर मिलूँगा 5000 वर्ष के बाद और ये कथा फिर से कहूँगा..फिर से कहूँगा..।